

णोः त्वं शतवल्शः बहुङ्कुरः सन्विरोह विशेपेण जायस्व वयं च सहस्रवल्शाः
पुत्रपौत्रादिभिर्वहुशाखोपेता विरुहेम प्रजायिमहि ॥४३॥

श्रीमन्महीधरकृते वेददीपे मनोरमे । आतिथ्यात्स्याणुहोमान्तः पञ्चमोऽध्याय
इतिः ॥५॥ ॥

अथ काण्वशाखायां पाठविशेषः ॥

- I. ॥ १॥१॥ २॥२॥ ३ [तसाऽअरि°] ॥३॥ ४ [अग्राऽअग्नि°] ॥४॥ ॥
- II. ॥ ५ a - [त्वा गृह्णामि परिपतये त्वा गृ°] - शक्नुन्नोजिष्ठाय ॥१॥ ५ b - °श-
स्तेन्यम् ॥२॥ अञ्जसा सत्यमुपगेषऽ सुविते मा धा अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपाः
॥३॥ ६ या तव - [या मम] - °स्पतिः ॥४॥ ७ - °प्यायस्व ॥५॥ ७ आप्या-
यया° - सुत्यामुद्वचमशीय ॥६॥ ७ दृष्टा - °दिभ्यो नमो दिवि नमः पृथिव्यै
॥७॥ ८ [हरीशया] ॥८॥१२॥ ॥
- III. ॥ १ a. b. c [व्यथितम्]. d [नाथितम्] ॥१॥ १ e-o [विदेरुग्नेर्नभो]. १०
॥२॥१४॥ ॥
- IV. ॥ ११ a-d ॥१॥ ११ e. १२ a. b ॥२॥ १२ c-f ॥३॥ १३ [°हृग्नेर्भस्मा-
स्यग्नेः पुरी°] ॥४॥१८॥ ॥
- V. ॥ १४ - °दृतिः ॥१॥ १५ [समूल्लम्] ॥२॥ १६ [विल्लऽदृते] ॥३॥ १७ a.
b ॥४॥ १७ c. d ॥५॥ १८ ॥६॥ १९ ॥७॥ २० ॥८॥ २१ ॥९॥२७॥ ॥
- VI. ॥ २२ [रक्षसो]. रक्षोहृणं वलगृह्णं वैल्लवीम् ॥१॥ २३ e-i [नः instead
of मे । °मुद्वपामि instead of °मुत्किरामि] ॥२॥ २४ [°राल°] ॥३॥ २५
a. b. c [°णो वल°] ॥४॥ २५ d. e [°णो वल°]. f. g ॥५॥३२॥ ॥
- VII. ॥ २६ a-e [रक्षसो] ॥१॥ २६ f. g. २७ a ॥२॥ २७ b - रूहामि ॥३॥
२७ b ब्रह्म - °ज्ञां दृढं । ध्रुवांसि ध्रुवोऽस्मिन्यज्ञमान आयतने भूयात् । २८
b. c ॥४॥ २९ ॥५॥ ३० ॥६॥३८॥ ॥